18
मेघ आए

18.1 भूमिका

आपने बादलों को घुमड़ते-बरसते देखा है ? आपने देखा होगा कि बरसात के दिनों में बादल कैसे घिर आते हैं। हवा तेज़ बहने लगती है। हवा के वेग से पेड़ भी झुकने-डोलने लगते हैं। धूल उड़ती है। बादल नीचे क्षितिज पर झुक आते हैं। बिजली चमकती है। अंततः प्रतीक्षा समाप्त होती है, और बादल बरसने लगते हैं। थोड़ी देर के लिए कल्पना कीजिए, कि वर्षा ;तु के बादल की तरह, गाँव में कोई प्रिय मेहमान आए। जैसे-एक युवक बहुत दिनों के बाद शहर से अपनी ससुराल वाले गाँव में आता है। गाँव में उसकी प्रतीक्षा रहती है। उसके गाँव में आने की हलचल भी वर्षाकालीन मेघों के आने की हलचल जैसी होती है। इन्हीं भावों को लेकर कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने 'मेघ आए' कविता की रचना की है।

इस कविता में कविता में कवि ने बादल और पाहुन दोनों में एक प्रकार का साम्य बिठाया है। आइए, इसे पढ़ते हैं।

18.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- 'मेघ आए' कविता का भाव बता सकेंगे
- वर्षा ;तु से गाँव के जीवन का संबंधा स्पष्ट कर सकेंगे;
- कविता के महत्त्वपूर्ण स्थलों का सौंदर्य बता सकेंगे;
- कविता का प्रतिपाद्य लिख सकेंगे;
- कविता के भाषा सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे।

18.3 मूल पाठ

आइए, हम इस कविता को पढ़ें:

मेघ आए

मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के।
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,
दरवाज़े खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली,

पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।
मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के।
पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,

बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी, घूँघट सरके।
मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के।

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
'बरस बाद सुधि लीन्हीं'-
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,

हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के।

क्षितिज-अटारी गहराई दामिनी दमकी,
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की,

बाँधा टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके,
मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के।

-सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

शब्दार्थ

बयार – हवा
पाहुन – मेहमान, अतिथि, दामाद
चितवन – नज़र, आँख
जुहार – प्रणाम
किवार – (किवाड़) दरवाज़ा
हरसाया – हर्षित हुआ, प्रसन्न हुआ
क्षितिज – जहाँ धरती और आसमान मिलते दिखाई देते हैं।
दामिनी – बिजली
अटारी – ऊपर की मंजिल का कमरा

18.4 बोधा प्रश्न

आपने कविता पढ़ी। अब, दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. इस कविता में किसका वर्णन किया गया है–

(क) आँधी का (ग) पाहुन का
(ख ऋतु का (घ) नदी का

2. *'ताल लाया पानी परात भर के'* से कवि का तात्पर्य है-

   (क) बारिश से ताल भर गए हैं

   (ख) ताल का पानी भर परात लाया है

   (ग) पानी से भरा ताल जैसा लगता है

   (घ) ताल और नदी एक हो गए हैं

3. किवाड़ की ओट से लता ने क्या कहा?

   (क) पहले क्यों नहीं आए (ग) बहुत दिन बाद आए

   (ख) अभी क्यों आ गए (घ) बहुत दिन बाद आते

18.5 क्रियाकलाप

1. बरसात का मौसम तो आप सबको अच्छा लगता है। बताइए, क्यों अच्छा लगता है?
2. बरसात के मौसम में कई तरह के प्राकृतिक परिवर्तन दिखाई देने लगते हैं, किन्हीं पाँच के बारे में बताइए।

.....

.....

.....

.....

18.6 आइए समझें

आइए, अब हम कविता की प्रथम पाँच पंक्तियों का भाव समझने के लिए इन्हें एक बार फिर से पढ़ लें।

अंश-1

मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के।

आगे–आगे नाचती-गाती बयार चली,

दरवाजे खिड़कियाँ खुलने लगी गली-गली,

पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।

मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के।

आकाश में बादल घिर आए हैं। बादल को देखकर कवि को ऐसा प्रतीत होता है जैसे गाँव में शहर से कोई मेहमान द्धकिसी का दामादऋ बन-सँवर कर, नए-धुले चमकदार कपड़े पहनकर, बना-ठना चला आ रहा हो।

गाँव में दामाद को 'पाहुन' अथवा 'पाहुना' भी कहा जाता है। कहीं-कहीं दामाद को 'मेहमान' भी कहा जाता है। यहाँ 'आए' सम्मानसूचक प्रयोग है। शहर से जब कोई मेहमान आता है तो लोगों को बड़ी खुशी होती है। बादल भी मेहमान की तरह कफी दिनों बाद आए हैं। बादल रूपी मेहमान के आने पर गाँव भर में खुशी की लहर दौड़ गई है। हम जानते हैं कि बादल घिरने से पहले शीतल हवा चलती है। इसीलिए, कवि ने कहा है कि 'आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली। अर्थात् बादल रूपी मेहमान के आगे नाचते-गाते चलने का काम हवा ने किया। हवा के चलने से पेड़-पौधो झूमने लगते हैं। हवा के नाचने-गाने का पता हमें इन पेड़-पौधों

के नाचने-गाने से चलता है। बादलों के आने से सारी प्रकृति प्रसन्न है। हम जानते हैं कि बरसात से पहले गर्मियाँ होती हैं। गर्मियों में लू चलती है। इससे बचने के लिए लोग अपने घरों के दरवाज़े और खिड़कियाँ बंद रखते हैं। लेकिन जब बादल के आने पर बाहर ऐसा शीतल और सुहावना वातावरण हो जाता है-प्रकृति नाचने-गाने लगती है, तो लोग भी इसका आनंद उठाने के लिए अपने घरों के दरवाज़े-खिड़कियाँ खोल देते हैं। सभी लोग बहुत दिनों के बाद आए बादल का स्वागत करते हैं, वैसे ही जैसे बहुत दूर से, बहुत दिनों के बाद आए मेहमान का स्वागत किया जाता है।

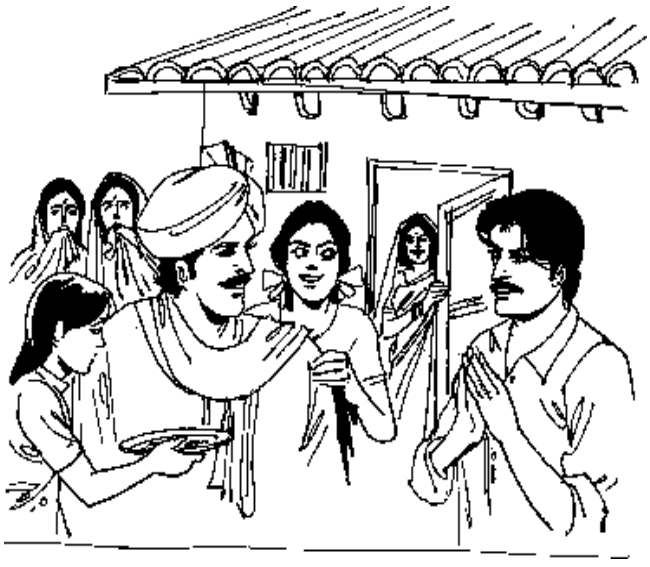

टिप्पणी

- इस कविता की विशेषता यह है कि, इसका अर्थ बादल और मेहमान दोनों के पक्ष में ठीक बैठता है।
- मेहमान शहर से गाँव आया है, इसलिए बन-ठन कर और सज-सँवर कर आया है। उधार नए बादल भी सजे-धाजे से प्रतीत हो रहे हैं।
- बादलों के स्वागत में हवा की खुशी वैसी ही है जैसे गाँव में मेहमान के स्वागत में घर तथा गाँव की किशोरियाँ खुश होती हैं।

पाठगत प्रश्न 18.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. सजे-धाजे मेघ किस तरह से आए ?

   (क) बड़े रोष के साथ
   (ख) धीरे-धीरे शांतिपूर्वक
   (ग) शहर से गाँव में आने वाले मेहमान की तरह
   (घ) नाचते-गाते मेहमान की तरह

2. बयार कब चली ?

   (क) मेघ आने से पहले
   (ख) मेघ जाने के बाद
   (ग) मेघ के साथ
   (घ) चली ही नहीं

अंश-2

आइए, अब हम कविता की अगली चार पंक्तियों को समझने से पहले उन्हें पुनः धयानपूर्वक पढ़ लें।

'पाहुन' यानी मेहमान के समान बादल आ पहुँचे, तो बड़ी हलचल हुई। पाहुन के आने पर जैसे लोग झुक कर या गरदन उचका कर, झाँक कर देखते हैं, वैसे ही बादल के आने पर पेड़ हवा के वेग से झुके और डोलने लगे। लगा जैसे जिज्ञासा मिटाने के लिए कुछ ग्रामवासी अतिथि

को देख रहे हों – कभी झुक कर तो कभी गरदन उचका कर। धीरे-धीरे हवा आँधी में बदल गई। आँधी चलते ही धूल उड़ने लगी। धूल का गुबार देखकर कवि को लगता है कि जैसे कोई ग्रामीण किशोरी (गाँव की युवती) अनजाने व्यक्ति को देखकर अपना लहँगा समेटे भागती चली जा रही है। यहाँ पर दो दृश्यों की समानता पर धयान दीजिए। आपने देखा होगा कि कई बार जब आँधी चलती है तो धूल का एक भँवर बन जाता है। ऐसा ही भँवर पानी में भी आता है। तो, इस आँधी और धाल के भँवर के लिए कवि कहता है–मानो धूल घाघरा उठाकर भाग रही है। बादलों का घिरना नदी के लिए भी अच्छा समाचार था। वह भी ठिठक कर देखने लगी। उधार मेहमान के आने के समाचार से गाँव की बहुओं ने घूँघट कर लिया है और अपनी तिरछी नज़र से उसे देख लेना चाह रही हैं। देखकर उन्हें भी लगता है कि हाँ, सचमुच मेहमान बड़े बन-ठन कर, सज-सँवर कर आए हैं।

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आंधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी, घूँघट सरके।
मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के।

यह तो आप जानते हैं, कि कवि कभी-कभी प्रकृति पर मानवीय भावनाओं का आरोपण करता है, अर्थात् प्रकृति को ऐसे काम करते हुए दिखाता है, जैसे मनुष्य करते हैं। इसको 'मानवीकरण' कहा जाता है। इस कविता में भी हवा, पेड़, आँधी, नदी आदि का मानवीकरण किया गया है।

टिप्पणी

इन सभी पंक्तियों में गति का चित्रण है। इसीलिए कवि ने गति का परिचय देने वाली क्रियाओं का ही चुनाव किया है, जिससे कविता चलचित्र की तरह का दृश्य उपस्थित कर देती है। देखिए :

1. पेड़ झुके
2. झाँकने लगे
3. गर्दन उचकाने लगे
4. आँधी चली
5. धूल भागी
6. बाँकी चितवन उठा
7. नदी ठिठकी
8. घूँघट सरके

इन सब क्रियाओं के मेल से आँखों के सामने पूरा चित्र-सा खिंच जाता है। यह चित्र बहुत सजीव और गतिशील प्रतीत होता है।

पाठगत प्रश्न 18.2

1. निम्नलिखित क्रियाएँ कविता में जिस क्रम में आई हैं, वह क्रम उनके सामने लिखिए :
   धूल भागी, नदी ठिठकी, पेड़ झुके, घूँघट सरके, आँधी चली

   .....

2. निम्नलिखित किसके प्रतीक बन कर आए हैं ? लिखिए :

(क) धूल ....

(ख) नदी ....

(ग) पेड़ ....

अंश-3

आइए, अब हम कविता की अगली पाँच पंक्तियों को ठीक से समझने से पहले एक बार पढ़ लेते हैं।

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
'बरस बाद सुधि लीन्हीं'–
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के।

अब मेहमान अपने गंतव्य पर (अर्थात् जहाँ उनको जाना है वहाँ) पहुँच चुके हैं। घर का बड़ा-बूढ़ा सदस्य मेहमान का स्वागत करता है। उसका अभिवादन करता है। यह मेहमान असल में दामाद है, जो काफी समय के बाद अपनी पत्नी के पास, उसके मायके में आया है। ग्रामीण परिवेश में शर्म-लिहाज के कारण, पत्नी पति के सामने नहीं आ सकती। अतः वह दरवाज़े की ओट लेकर, बेचैनी से उलाहना देती है कि एक बरस के बाद हमारी खबर ली है। कवि ने पीपल को मेघ रूपी अतिथि का स्वागत करते दिखाया है। किवाड़ से लिपटी लता को मायके में रहने वाली ऐसी युवती के रूप में चित्रित किया है, जिसका पति एक बरस बाद उससे मिलने आया। वह सामने तो नहीं आ सकती, लेकिन किवाड़ की ओट से शिकायत जरूर कर सकती है कि *'बरस बाद सुधि लीन्हीं'*, यह चित्र बरबस मन को छू लेता है। लता ने बादल के बिना कितना दुख झेला है, कितना ताप सहन किया है, वह हमारे सामने स्पष्ट हो जाता है।

गाँवों में, अभी भी यह परंपरा है, कि मेहमान के घर पर आते ही पैर धुलवाए जाते हैं। पैर धुलवाने से धूल-मिट्टी तो साफ होती ही है, लंबी यात्रा की थकान भी जाती रहती है। यहाँ भी मेहमान के पैर धोने के लिए घर का कोई व्यक्ति हर्षित होता हुआ परात (थाली जैसे बड़े आकार के बर्तन) में पानी भरकर ले आया। ससुराल में अक्सर यह काम साला करता है मेघ के लिए यह काम ताल ने खुशी-खुशी किया। अनुमान लगाइए उसकी खुशी का कारण क्या है ? यही बादल बरसेंगे तो तालाब भी भरेगा। इसलिए वह 'हरसाया' हुआ है अर्थात् बहुत खुश है। क्या आप बता सकते हैं पीपल को बड़ा-बूढ़ा बुजुर्ग क्यों कहा गया है? वह इसलिए, क्योंकि पीपल के वृक्ष की आयु बहुत अधिक होती है।

टिप्पणी

आप देख रहे हैं कि कविता में हर तीन पंक्तियों के बंद के बाद *'मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के'* पंक्ति दोहराई जा रही है। इसे कविता की भाषा में टेक कहते हैं, जो कविता की मूल बात को इंगित करती है। कविता में बार-बार आने से यह उसकी लय और संगीत का सौंदर्य बढ़ाती है। हर कविता में टेक का होना ज़रूरी नहीं होता। यहाँ ऊपर की जो पंक्तियाँ हैं, *'मेघ आए बन-ठन के सँवर के'* इनके समूह को 'बंद' कहा जाता है।

पाठगत प्रश्न 18.3

निम्नलिखित कथनों के सामने सही (√) और गलत (X) का निशान लगाइए–

(क) बूढ़ा व्यक्ति मेहमान के स्वागत में नहीं उठता है ☐

(ख) मेहमान की पत्नी ने किवाड़ की ओट से बात की ☐

(ग) घर का मुखिया परात में पानी भरने तालाब पर चला गया ☐

(घ) मेहमान साल भर बाद खबर लेने आया था ☐

(ड) मेहमान के आने पर तालाब बहुत खुश था ☐

अंश-4

आइए, कविता की शेष पंक्तियाँ पुनः पढ़ लेते हैं।

क्षितिज-अटारी गहराई दामिनी दमकी,
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की',
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके,
मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के।

आकाश में बादल छा गए। क्षितिज पर गहरे बादलों में बिजली कौंधी और वर्षा प्रारंभ हो गई। झर झर वर्षा होने लगी। इस भाव को कवि ने मेहमान और उसकी प्रिय पत्नी के मिलन के प्रसंग में प्रस्तुत किया है। उसने सबके सामने किवाड़ की ओट से देखा और शिकायत की – 'बरस बाद सुधा लीन्ही।' वह शायद रूठी बैठी थी। शायद उसने अपने मन में गाँठ पाल ली थी, कि पति के बरस भर न आने के पीछे कोई और कारण तो नहीं। कहीं उसे भुला ही न बैठा हो। पर जब दोनों मिले तो मानो बिजली-सी कौंधी। पत्नी के मन की गाँठ खुल गई। सारी शंकाएँ मिट गईं। मिलन के आँसुओं के साथ बहकर वियोग धुल गया। वर्ष भर के वियोग का बाँधा टूट पड़ा। वह अपनी भूल के लिए क्षमा माँगने लगी।

टिप्पणी

इन पंक्तियों में पति-पत्नी के मिलने का बड़ा सुंदर और शालीन चित्र है। मिलने के बाद ही उसे पति के प्रेम का प्रमाण मिल जाता है और उसके आँसू बहने लगते हैं। मेघों के पक्ष में भी बिजली चमकने के बाद वर्षा की झड़ी लगने का संकेत है। बादलों में संचित जल ऐसे बरसने लगा जैसे कोई बाँधा टूटा हो।

पाठगत प्रश्न 18.4

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक पंक्ति में लिखिए :

1. लता ने बादल रूपी मेहमान को किस तरह देखा?

   .....

2. '*क्षमा करो गाँठ खुल गई भरम की*' पंक्ति में किसने किससे क्षमा माँगी?

   .....

3. पत्नी को क्या 'भरम' हो गया था ?

   .....

4. 'पाहुन' के संदर्भ में दामिनी का क्या अर्थ है ?

   .....

18.7 भाव-सौंदर्य

- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता 'मेघ आए' में बादलों का आकाश में आने का और छाने का बहुत आकर्षक और रोचक चित्र खींचा गया है।
- मेघ का चित्रण गाँव में शहर से आए मेहमान की तरह किया गया है। अत: कविता में दो अर्थ साथ-साथ चलते हैं। एक बादल का और दूसरा मेहमान का।
- मेघ के आने की विभिन्न स्थितियों का वर्णन बहुत सुंदर बन पड़ा है, जिसे मेहमान के गाँव में आने की स्थितियों के साथ जोड़ कर मार्मिक बना दिया गया है।
- कविता में ग्रामीण परिवेश का चित्रण है। एक घर का पाहुन सारे गाँव का सम्माननीय होता है। लोग उसका स्वागत करते हैं। बहुएँ घूँघट काढ़ती हैं, घूँघट के भीतर से तिरछी नजरों से देखती रहती हैं।

18.8 भाषा-शैली

1. जब कवि एक स्थिति को दूसरी के साथ मिलाकर, एकरूप बनाकर प्रस्तुत करता है, तो उसे रूपक अलंकार कहा जाता है और जब, कवि एक स्थिति के विभिन्न पक्षों का वर्णन दूसरी स्थिति के साथ विस्तार से करता है, तो उसे **साँग रूपक** कहा जाता है। 'मेघ आए' कविता में भी साँग रूपक अलंकार है, क्योंकि यहाँ मेघ के आने के विभिन्न पक्षों को, गाँव में मेहमान के आने के विभिन्न पक्षों के साथ एक रूप करके वर्णन किया गया है।
2. कवि की भाषा सरल और सहज है। शब्द भी आसान और बोलचाल की भाषा के हैं। कहीं-कहीं ग्रामीण भाषा का भी पुट है, जैसे-बयार, पाहुन, घाघरा, जुहार, सुधि लीन्हीं, किवार, परात, अटारी आदि।
3. कविता में कुछ परंपरागत रीति-रिवाजों का भी उल्लेख हुआ है। जैसे-जुहार करना, पैर धुलवाना आदि।
4. कुछ मुहावरों का भी कवि ने सार्थक प्रयोग किया है। जैसे - बन-ठन कर आना, सुधि लेना, गाँठ खुलना, बाँधा टूटना आदि।

पाठगत प्रश्न 18.5

निम्नलिखित कथनों के 'हाँ' या 'नहीं' लिखकर उत्तर दीजिए:

(क) मेहमान का वर्णन मेघ के रूप में किया गया है। --------

(ख) पति शहर में पत्नी को छोड़कर आया है। --------

(ग) पत्नी पति से नाराज़ बनी रही। --------

(घ)कविता की भाषा बहुत कठिन है। --------

(ड) कविता में दो स्थितियों का साथ-साथ चित्रण हुआ है। --------

18.9 आपने क्या सीखा

1. 'मेघ आए' कविता सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने लिखी है।
2. कविता में कवि ने आकाश में बादल और गाँव में मेहमान के आने का रोचक वर्णन किया है।
3. कविता में दो स्थितियों के विभिन्न पक्षों का साथ-साथ चित्रण किया गया है। इस कारण साँग रूपक अलंकार है।
4. कविता में कुछ रीति-रिवाज़ों का भी मार्मिक चित्रण हुआ है।
5. कवि की भाषा बहुत सरल और सहज है। कुछ ग्रामीण शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे-बयार, पाहुन, घाघरा, जुहार, सुधि लीन्हीं, किवार, परात, अटारी आदि। बन-ठन कर आना, खुशी के आँसू बहना जैसे मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है।

18.10 योग्यता विस्तार

✦ कवि परिचय

इस कविता के लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म बस्ती, उत्तर प्रदेश में हुआ। उनकी उच्च शिक्षा पहले काशी, फिर इलाहाबाद में हुई। कुछ समय अधयापन करने के बाद वे आकाशवाणी में सहायक प्रोड्यूसर हुए। वे साप्ताहिक 'दिनमान' के प्रमुख उप-संपादक भी रहे।

सर्वेश्वर जी ने कविताओं और बाल-कविताओं के अलावा उपन्यास, कहानी, नाटक भी लिखे हैं। काव्य-संग्रहों में 'काठ की घंटियाँ', 'कुआनो नदी', 'खूँटियों पर टँगे लोग' प्रमुख हैं। उनका एक नाटक 'बकरी' बहुत प्रसि) हुआ।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

✦ आपके पढ़ने के लिए महादेवी वर्मा की यह कविता दी जा रही है। इसे पढ़ आए मेघ आए से इसकी तुलना कीजिए:

लाए कौन संदेश नए घन !

अंबर गर्वित,
हो आया नत,
चिर निस्पंद हृदय में उसके,
उमड़े री पुलकों के सावन !
लाए कौन संदेश नए घन !

चौंकी निद्रित,
रजनी अलसित,
श्यामल पुलकित कंपित कर में
दमक उठे विद्युत के कंकण।
लाए कौन संदेश नए घन !

18.11 पाठांत प्रश्न

1. मेघ और मेहमान के आने से वातावरण में क्या परिवर्तन हुए? विस्तार से लिखिए?
2. 'मेघ आए बड़े बन-ठन के, सँवर के' कवि ने ऐसा क्यों कहा है?
3. निम्नलिखित के प्रतीक अर्थ लिखिए:

   (क) बयार (ख) पेड़ (ग) धूल

   (घ) नदी (ड) लता (च) ताल
4. निम्नलिखित का अर्थ स्पष्ट कीजिए :

   (क) जुहार की

   (ख) बरस बाद सुधि लीन्हीं

   (ग) झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।
5. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित भाव स्पष्ट कीजिए :

   द्धकऋ आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,

   दरवाज़े-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली

   द्धखऋ पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,

   आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए।

   द्धगऋ क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी

   क्षमा करो, गाँठ खुल गई अब भरम की,
6. 'मेघ आए' कविता की भाषा सरल और सहज है - उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
7. निम्नलिखित कविता को धयान से पढ़िए तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

   अमल धावल गिरि के शिखरों पर बादल को घिरते देखा है
   छोटे-छोटे मोती जैसे, अतिशय शीतल वारि कणों को
   मानसरोवर के उन स्वर्णिम कमलों पर गिरते देखा है
   तुंग हिमालय के कंधाों पर, छोटी बड़ी कई झीलों के
   श्यामल शीतल अमल सलिल में,
   समतल देशों से आ-आकर
   पावस की उमस से आकुल
   तिक्त मधाुर विसतंतु खोजते, हंसों को तिरते देखा है।

   1. कवि का अमल धावल गिरि' से क्या आशय है?
   2. इस कविता में किसका वर्णन किया गया है?

      द्धकऋ बादल द्धगऋ बारिश

      द्धखऋ पर्वत प्रदेश द्धघऋ हंस
   3. हंस समतल देशों से क्यों आए हैं ?

18.12 उत्तर-माला

बोधा प्रश्नों के उत्तर

1. (ख) 2. (क) 3. (ग)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

18.1 1. (ग) 2. (क)

18.2 1. पहला-पेड़ झुके, दूसरा-आँधी चली, तीसरा-धूल भागी, चौथा-नदी ठिठकी, पाँचवा-घूँघट सरके

2. (क) किशोरी (ख) बहुएँ, (ग) ग्रामवासी

18.3 (क) × (ख) √ (ग) × (घ) √ (ड) √

18.4 1. पति के रूप में

2. पत्नी ने पति से

3. पति उसे भूल गया है

4. क्रोध में कहे गए वाक्य

18.5 (क) हाँ (ख) नहीं (ग) नहीं (घ) नहीं (ड) हाँ

सुनें, गुनें, बोलें, बतियाएँ

आपने यह पाठ पढ़ा। अब आप इसी से संबंधित सामग्री कैसेट पर सुनें, समझें और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दें।